DIVYAYATAN
A JOURNAL OF LAKULISH YOGA UNIVERSITY

DIVYAYATAN -
A JOURNAL OF LAKULISH YOGA UNIVERSITY
Peer Reviewed Journal
E-ISSN: 3048-4928

धार्मिक क्रियायों की वैज्ञानिक पद्धति- एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ धीरेन्द्र मिश्रा

फेकल्टी,

स्वास्थ्य, संस्कृति एवं व्यक्तित्व विकास केंद्र

गुजरात केंद्रीय विश्वविद्यालय,गांधीनगर

ईमेल: mishradhirendra1995@gmail.com

डॉ श्रीश कुमार तिवारी

सहायक अध्यापक,

School of National Security Studies

गुजरात केंद्रीय विश्वविद्यालय,गांधीनगर

सारांश

भारत के अतिप्राचीन ज्ञानपद्धति का निर्माण एवं प्रसार केवल गुरूकुलों में ही नही किन्तु लोकस्वीकृति के द्वारा भी पुष्पित एवं पल्लवित हुआ है। प्रथमदृष्टया यह भले उत्तराधिकार से प्राप्त संस्कार,लोकाचार,पारितोषिक अथवा दंड की प्रत्याशा के कारण स्वीकार्य माना गया हो किन्तु ऐसी स्वीकृति लोभाचार अनादिकाल से वर्तमान पर समान भाव में स्वीकार्य हो यह पूर्णतया असंभव है। प्रस्तुत यह आलेख उन कारणों की विवेचना के उद्देश्य से युक्त है जो इन संस्कारों को काल निर्बाधित बनाये हुये है। साथ ही आलेख यह भी समझाने का प्रयास करता है कि वे कौन से तत्त्व है जो सदाचार,लोकाचार एवं मानवीय एवं प्राकृतिक व्यवहारों में सामंजस्य साहचर्य एवं समन्वय स्थापित किये है।

***मुख्य शब्द** (Keywords): लोकाचार, धार्मिक अनुष्ठान, सदाचार, विज्ञान, तत्त्व*

प्रस्तावना

विज्ञान एवं कला ज्ञान की वे दो शाखायें हैं जो बहु आयामी हैं। तथा ज्ञान की समस्त प्रमुख उपशाखायें इन्ही के मत विभाजित हैं। कला से आशय किसी कार्य को उत्कृष्टता के साथ सम्पादित करने में सक्षम होने में है यथा- गीत संगीत का ज्ञान, पाककला, चित्रकला, इत्यादि। कला की प्रमुख विशेषता यह है कि यह व्यक्ति सापेक्ष होती है। अर्थात कार्य की उत्कृष्टता व्यक्ति के परिवर्तित होने से प्रभावित होती है। इसके विपरीत वैज्ञानिक क्रियायें व्यक्ति निरपेक्ष एवं सिद्धांत सापेक्ष होती है। समस्या का आकलन एवं संभवित समाधान, अलब्ध विकल्प, प्रेक्षा, प्रयोग निष्कर्ष तदुपरांत निष्कर्ष का सामान्यीकरण विज्ञान की मूलभूत विशेषतायें हैं । प्राचीन, वैदिक, रीतिरिवाज, धार्मिक कृत्य परोक्ष अथवा प्रत्यक्ष रूप से वैज्ञानिक सिद्धांतो पर उपस्थित होते हैं। यही सिद्धांत एवं उनसे प्राप्त निष्कर्ष इन धार्मिक कृत्यों को काल निरपेक्ष बनाते हैं।

वर्णव्यवस्था, नीति, धार्मिक- क्रियाओ एवं तत्वज्ञान ये कोई भी धर्म का मूल है । हिन्दुस्तान की जमीन पर जो प्रजा रहती है उन्हे हिन्दु कहते है, और वे लोग जो आचरण करते है उसे "हिन्दु धर्म" मानते है । यहाँ पर एक जाति नही परंतु विविध प्रकार के लोग अपने अपने वर्ण, गोत्र, कुलाचार, के अनुसार अपना अपना धर्म विविध अनुसार पालन किये । ऐसे अनंत काल से विविध जाति के लोग धार्मिक क्रियाये भी विविध प्रकार की थी, जो प्राचीन काल से आज भी अंखड रूप से चल रही है । स्वस्थ जीवन

© 2024 by Author

DIVYAYATAN
A JOURNAL OF LAKULISH YOGA UNIVERSITY
DIVYAYATAN -
A JOURNAL OF LAKULISH YOGA UNIVERSITY
Peer Reviewed Journal
E-ISSN: 3048-4928

जीने के लिए कुछ क्रियाओं को आदत बनानी पडती है। वेद, उपनिषद, ब्रह्मसूत्र, कल्प, इत्यादि शास्त्रो में निरूपित क्रियाये ही स्वस्थजीवन का रहस्य है। ऋषियों ने उनका दर्शन करके उसका महत्व लोगो का समझाया। ये क्रियाएँ निरंतर चलति रहे तो मनुष्य का बाह्यन्तर विकास हो, इसलिए उन्होने इन क्रियायों को धर्मोपासना के साथ जोड दिया। इसमे निश्चित रूप से उनकी श्रेय भावना थी, अतः मनुष्यो की समग्र पीढी उन ऋषियो की ऋणी रहेंगी। अब ये क्रियाएँ धर्म के साथ जुडी की धार्मिक क्रिया बन गई ये क्रियाएँ पीढी दर पीढी चलती रही परंतु कुछ समय के बाद हम लोग इन क्रियायो के पीछे का हेतु भूल गए। जो क्रियाएँ आज भी सतत चल रही है उन्हे समझदारी के उनके तथ्य समझकर करे तो उनका बहुत ज्यादा फायदा है। जैसे की वेदप्रमाण वाली क्रियाएँ और धार्मिक क्रियायों के नाम पर चल रही अंधश्रद्धा इन दोनो वस्तुओं के बीच भेद जानना जरूरी है। आज की जो नई पेढी विज्ञान और तर्क पर भरोसा ज्यादा रखती है, तो यदि अगर उन्हे धार्मिक क्रियाओ में रही विज्ञान के विषय में जानकारी दिया जाय तो धार्मिक क्रियायें वे और आदरपूर्वक करेंगे। ऐसे पश्चिम संस्कति के पीछे जा रही पेढी को, भारतीय संस्कृति तरफ आकर्षित कर सकते है।

1. दीप- प्रागट्य –

कोई भी शुभ कार्य का आरंभ दीप – प्रागटय से होता है। **" यज्ञस्य देवमृत्विजम् "**[1] यज्ञ हो या पूजा उसमें दीप अनिवार्य रूप से देखने को मिलता है। बहुत मंदिरो में अखंड दीपक भी देखने को मिलता है। बहुत से घरो में प्रातः घरो में प्रातः पूजा एवं सायं पूजा के समय में भी दीपक देखने को मिलता है। दीपक ये प्रकाश का प्रतीक माना जाता है, जो अंधकार का नाश करता है। एक अंधेरे खंडमे दीपक प्रकट करने से अंधकार का नाश होता है, ऐसे ही दीप प्रागटय से हमारे जीवन में हेमेशा प्रकाश रहे ऐसा आशीर्वाद है। अभी कोई ऐसा कहे कि tubelight अथवा battery से भी प्रकाश होता है, तो दीपक ही

क्यो ? तो उसका जवाब है ,कि दीपक ये एक प्रतीक है। उसमें रहे घी /तेल, मनुष्य के अन्दर रहा अहं जैसा दूषण है। जैसे घी / तेल जलता है तो दीपक प्रकाश देता है वैसे ही मनुष्य के अन्दर दूषणो का नाश होता है तो ही मनुष्य की प्रगति होती है।ये वस्तु याद रहे और उसे आचरण में ले सके इसलिए दीपक का महत्व है। दीपक की ज्योत की तरह मनुष्य भी उर्ध्वगमन करे ऐसी श्रेयोभावना है। ऐसे दीपक को ज्ञान का प्रतीक माना जाता है। वेदो में अग्नि को देवो का आह्वान करने वाला पुरोहित माना जाता है।

2. प्रार्थना खंड –

वेदो उपनिषदो के प्रमाण के अनुसार, ईश्वर सर्वव्याप्त है, उसने पृथिवीका निर्माण किया। हम जिस घर में रहते है वो भी उसी की कृपा है। तो सर्वव्याप्त ईश्वर की भक्ति के लिए उसी के घर में एक छोटा खंड ? तो क्या ऐसा समझा जाय ईश्वर केवल एक खंड में है ? नही, जैसे घर में प्रवृत्ति के लिए एक निश्चित स्थान होता, उदाहरण के लिए भोजन के लिए रसोईघर , शयन के लिए शयनखंड, अतिथियों के लिए अतिथि खंड वैसे ही पूजा के लिए भी एक निश्चित खंड। इस खंड में ईश्वर का स्मरण, जप, आरती जैसी क्रियाएँ होती है।

प्रार्थना खंड निर्माण करने के पीछे कारण यह है कि, उस खंड का वातावरण बहुत ही सकारात्मक होता है। आरती, धूप, दीप, इत्यादि से प्रार्थना खंड में मधुर वातावरण होता है। ऐसे प्रसन्न स्वच्छ वातावरण में प्रवेश के साथ ही , मनुष्य का मन भी प्रसन्न और सकारात्मक हो जाता है। मनःस्थिति प्रफुल्लित हो जाती है और मन शांत हो जाता है। चंदन के सुमधुर सुंगध में मन ईश्वरकृपा के विचार करता है। आंनद एवं संतोष अनुभव करता है। कोई भी मुश्किल अथवा समस्या में फसे व्यक्ति ईश्वराश्रित होता है, तब वह प्रार्थना खंड में बैठता है, जितना समय वह प्रार्थना खंड में बैठता है, उतने समय उसका मन शांत रहेता है, और शांत, सकारात्मक मन मुश्किलो का समय निकाल देता है और समस्याओ से लडने की शक्ति मिलती है। ऐसे इस प्रार्थना खंड निर्माण करने का हेतु स्पष्ट है।

3. मस्तक झुकाकर "नमस्ते" कहना -

हिन्दु धर्म में प्रत्येक बार जब मिलो तो मस्तक झुकाकर "नमस्ते" कहने की प्रथा है। इस क्रिया का अर्थघटन दो तरह से हो सकता है। (1) जब हम अपना मस्तक झुकाते है तो हम अपना अहं भुलाकर, सामने रहे व्यक्ति को उच्च और माननीय स्थान पर रखते है, ऐसी हमारी भावना से सामने का व्यक्ति हमारे लिए स्नेह उत्पन्न करता है, और सहज रीत से उनके हृदय से हमारे लिए आशीर्वाद और श्रेयोभावना निकलती है, जो वे हमारे मस्तक पर स्पर्श करके देते है। ऐसे जहाँ प्रत्येक बार जब हम बडे व्यक्ति को मिलते समय, मंदिर में ईश्वर मूर्ति के समक्ष अथवा तो पूजा या यज्ञ में भी नमस्कार करने की ये धार्मिक क्रिया मनुष्य के अंतर को गढता है। शास्त्रो में भी इस क्रिया का उल्लेख है। जैसे कि **" समुद्र वसने देवि पर्वतस्तनमंडले "**[2] बार बार अपने अहं को ठेस पहुँचाकर सामने वाले व्यक्ति को मान देने की आदत अपने मन में होती है। ऐसे करने से लंबे समय तक मनुष्य में मिथ्या अहंकार का क्षय होता है। ये भी एक मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया है। इस क्रिया का महत्व जानकार उसे हृदयभाव से नमस्कार ये कोई आडंबर नही है , सच में तो मनुष्य में मधुर निर्ममत्व लाता है, एवं अहंकार रहित मनुष्य ही प्रभु के पास जा सकता है और जीवन व्यवहार में कुशल रह सकता है।

© 2024 by Author

DIVYAYATAN -
A JOURNAL OF LAKULISH YOGA UNIVERSITY
Peer Reviewed Journal
E-ISSN: 3048-4928

4. कपाल पर तिलक / भस्म –

पुराणकाल में, कथाओं में, चित्रो में हमेशा यह देखने को मिलता है कि विष्णुजी ने चंदन का तिलक किया है , अथवा शिवजी ने भस्मलेप किया है , रघुवंश के कुलदीपक राजा राम भी कुमकुम का तिलक किये है। ये प्रथा आज भी चल रही है। कपाल पर दोनो भौहों के बीच के स्थान पर कुमकुम, चंदनलेप, अथवा भस्म जैसा प्राकृतिक तथा स्वभाव में शीतल ऐसा द्रव्य लगाते है। विज्ञान के दृष्टि से इस स्थान पर मनःस्थिति का चक्र होता है। इस जगह से विचारो का उदभव होता है। इस जगह से बुद्धी की गति होती है। इसलिए बहुत बार मानसिक विचारो के संघर्ष के कारण, शिरोवेदना होती है। और उस चक्र पर चंदन इत्यादि का लेप लगाने थंडक मिलती है। बुद्धी तीव्र बनती है, मनःस्थिति में सकारात्मक विचारो का आगमन शरीर में शक्ति में प्रमाण भी रहेता है।

आधुनिक युग में प्रथा का लय होने से, लोगो में माईग्रेन जैसे रोगो का प्रमाण बहुत ही बढा है। बुद्धी का क्षीण होना इत्यादि लक्षण देखने को मिलता है। आज तिलक केवल सुशोभन बनकर रह गया है। उसका यथार्थ तथ्य जानकार उसका अमल करने में आए तो निश्चित तौर से परिणाम मिलता है। चंदन के लेप के साथ भस्म लगाने की भी एक एक प्रथा है। कोई भी हवन, यज्ञ, की पूजा के बाद बाकी रही हुई भस्म सबको प्रसाद के रूप में देने को आती है। यज्ञ में समीध, घी, पंचामृत, इत्यादि आयुर्वेदीक सामग्री होती है। ऐसी शुद्ध सामाग्री से बनी भस्म शरीर में लगाने से कफ, पित्त, इत्यादि पीडा से मुक्ति मिलती है। ऐसे इसका भी महत्व है। उपनिषदो में उल्लेख है कि मृत्युंजय मंत्र का जाप करके शरीर में लेप लगाना चाहिए " ॐ त्र्यंबकं यजामहेसुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् "[3]

5. भोजन के पूर्व ईश्वर का भाग –

भारतीय पंरपरा के अनुसार भोजन के पूर्व एक भाग – "ईश्वर का भाग" अलग से निकालते है। और उसके बाद भोजन " प्रसाद " की दृष्टि से ग्रहण करने में आता है। पूजा के समय भी "नैवेद्य " के तरीके से प्रथा है। प्रसाद में मिला भोजन पुनीत बनता है "यज्ञशिष्टाशिनः सन्तो मुच्यन्ते सर्वकिल्बिषैः "[4] ऐसे प्रसाद में मिला भोजन ईश्वर का प्रसाद है ऐसे देखने का दृष्टिकोण बदलता है, उसके स्वाद इत्यादि की अवगणना करने में नही आती है। प्रसन्न चित्त से भोजन ग्रहण करने में आता है। ऐसे प्रसन्न चित्त से ग्रहण किया हुआ अन्न हमेशा लाभदायी बनता है। मंदिरो में भी प्रसाद में मिला भोजन सभी को देने में आता है। कोई भी भेदभाव बिना, ऐसे जरूरतमंद को भी प्रसाद रूपी भोजन मिलता है।

6. उपवास –

वार, तहेवार उपवास रखने की प्रथा है, मतलब की कुछ समय के लिए अन्न का निषेध करने में आता है। परंतु उपवास शब्द का अर्थ होता है कि उप = नजदीक एवं वास = रहेना "उपवास्"

/"उपवासम्" " TO dwell in or inhabit " / The state of being near [5] ऐसे उपवास ईश्वर के पास रहना, इस प्रथा का वैज्ञानिक एवं मनोवैज्ञानिक दोनो तरीके से महत्व है। मनुष्य का मन खाने पीने के पीछे ही सतत संलग्न रहेता है। सुबह से उठकर मनुष्य रोटी कमाने के पीछे ही दौडता रहेता है। इसलिए एक पवित्र निर्धारित दिन मनुष्य अन्न भोगविलास से मन हटाकर ईश्वर केन्द्रित करे इसलिए ये प्रथा है। वार, तहेवार आने जाने पर ईश्वर केन्द्रित मन करने से मन में ईश्वर के प्रत्ये आकर्षण बढता है। इसके उपरांत निरंतर भोजन करता हुआ शरीर हफ्ते में, महीने में, अथवा कुछ दिन भूखा रहे तो उसकी पाचन शक्ति प्रक्रिया इत्यादि का शुद्धिकरण होता है।ये वैज्ञानिक कारण है।

उपवास से इन्द्रियसंयमित होती है, वासानाओ पर नियंत्रण मिलता है, मन सकारात्मक दिशा मे रहता है। उपवास मनुष्य को दुर्बल नहीं बलवान बनाता है। उपवास में खाने के तरफ आकर्षित होकर उपवास के बाद अधिक भोजन करना गलक पद्धति है। ऐसा तभी होता है कि अगर उपवास का अर्थ पता न हों। अगर उपवास यथार्थ भाव से करने में आए तो मनुष्य का आध्यात्मिक, मानसिक, और शारीरिक विकास होता है। श्रीमद्भगवतगीता में भी "युक्त आहार", "सात्विक आहार" का आग्रह किया गया है।

7. प्रदक्षिणा –

ये क्रिया लगभग हिन्दु धर्म के प्रत्येक मंदिर में देखने को मिलता है। पूजा, आरती के पश्चात् श्रद्धालु भक्त दाहिने तरफ से शूरू करके मूर्ति का चक्कर लगाने लगते है। उसे ही प्रदक्षिणा कहते है। ये प्रतिकात्मक है, एक मध्य – केन्द्रबिन्दु बिना कोई भी जगह के बिना प्रदक्षिणा शक्य नही है, इसलिए ईश्वर की मूर्ति को मध्य में रखकर भक्तलोग उसकी प्रदक्षिणा करते है। ऐसे करने के पीछे आशय यह है कि हम अपने जीवन में जो कुछ भी करते है, हमारे मध्यस्थान में, केन्द्र स्थान में ईश्वर ही होने चाहिए, ईश्वर को ध्यान में रखकर सभी काम करने चाहिए, निष्ठा के साथ सब काम करना चाहिए। प्रदक्षिणा के समय हम कहीं भी खडे रहें तो भी हर दिशा ईश्वर की

© 2024 by Author

DIVYAYATAN -
A JOURNAL OF LAKULISH YOGA UNIVERSITY
Peer Reviewed Journal
E-ISSN: 3048-4928

तरफ ले जाएँगी। ऐसे ही जीवन में कोई भी रस्ते से निकले वो रस्ता ईश्वर को ही मिलना चाहिए। ऐसे ही ईश्वर को मध्य में रखकर सभी कार्य करने चाहिए, इस भाव का प्रतिपादन ये प्रदक्षिणा प्रथा करती है। वो हमेंशा दाहिने तरफ से करने में आती है कारण कि दाहिना तरफ भारतीय परपंरा में शुभ माना जाता है।

8. तुलसी, गौ इत्यादि पूजा -

वेदो में स्पष्ट लिखा है कि भगवान प्रत्येक अणु में है। कृष्ण जितना मनुष्यो में है, उतना ही वृक्षो में उतना ही एक चीटी में भी है – ये समझाने के लिए कृष्ण ने एक साथ में गोपियो के साथ रास रसाने का दृश्य खडा किया। वो उनकी लीला नही थी परंतु वे "जले कृष्ण स्थले कृष्ण"
का उदाहरण देना चाहते थे। तुलसी आदि वनस्पति मनुष्य के खूब ही उपयेगी है। आज ज्यादातर औषधीयाँ तुलसी जैसे वनस्पति से ही बनती है। एक माँ की तरह तुलसी जीवन को सुरक्षित रखकर अनेक औषधियाँ देती है। " यद्ग्रे सर्व वेदश्च तुलसी त्वं नमं मह्यं " ॥[6] उसी तरह गाय भी है, जो दूध देती है उससे जीवन निर्वाह की अनेक सामग्री बनती है। तुलसी एवं गौ तो एकमात्र उदाहरण है , उनके तरह प्रत्येक वनस्पति एवं प्रत्येक प्राणी पूजनीय है, भले उसमें से जीवन निर्वाह के कोई भी पदार्थ प्राप्त न होता हो तो भी उनमें कृष्ण समान रूप से है। इसलिए वेदों में भी उन्हे देवतुल्य माना है।

9. मंदिर में घंट नाद और शंखनाद का महत्व –

मंदिर में घंटनाद अथवा पूजा के समय छोटी सी घंटी बजाने की प्रथा है। ये घंटनाद भगवान को जगाने के लिए है यह मिथ्या है। जिस शक्ति के कारण सम्पूर्ण जगत जागता है, चलता है, उसे जगाने की क्या आवश्यकता है। शास्त्र में ॐ को ब्रम्हास्वरूप माना जाता है , और इस ॐ की ध्वनि समस्त ब्रह्मांड और आकाश में है। घंटनाद भी ॐ ध्वनि का सर्जन करता है। इसलिए प्रत्येक मंदिर में ये पवित्र ध्वनि को सुनने के लिए घंटनाद होता है। इस घंटनाद से मनुष्य बाह्यन्तर रीत से पवित्रता अनुभव करता है। कभी कभी घंटनाद के साथ शंख, ढोल इत्यादि बजाने भी आते है , जिसका आशय केवल इतना ही है अन्य अपवित्र अवाजो से भक्तजन भक्ति से विचलित न हो "कुर्वे घंटारवं तत्र देवताहवानालक्षणम् "[7] ऐसे श्लोको से पौराणिक दस्तावेज मिलते है। शंखासुर राक्षस ने देवताओं को हराकर वेदो को समुद्र में खूब नीचे डाल दिये , तब सारे देवताओं ने भगवान विष्णु की सहायता मांगी, भगवान विष्णु ने मत्स्य अवतार लेकर शंखासुर का वध किया, एवं उसके शंख जैसे कानो में फूंक मारकर कान में ॐ ध्वनि प्रगट हुई, जिसमें से सभी वेद पुनः प्रगट हुएँ "निर्मितः सर्वं दैवश्च पांचजन्य नमोस्तुते ॥"[8] वेदो में जैसे सर्वज्ञान है वैसे ही शंख में भी सर्वज्ञान है। ॐ को सत्य का प्रतीक माना जाता है , इसे "नादब्रह्म" भी कहा जाता है।

10. आरती का महत्व –

" तमेव भान्तमनुभाति सर्वं तस्य भासा सर्वमिदं विभाति ॥"[9] कोई भी पूजा कि आराधना के अंत में आरती करते करते ऐसे श्लोको का उच्चारण होते है। आरती यानि कि दाहिने हाथ में दिवा लेकर ईश्वर की मूर्ति के दाहिने तरफ गोल गोल घुमाने की पद्धति। इस पद्धति का वैज्ञानिक ऐर मनोवैज्ञानिक दोनो तरह से महत्व है। आरती के साथ साथ घंटी, शंख इत्यादि साधनो का पवित्र ध्वनि होती है इसके साथ ईश्वर स्मृति के श्लोक अथवा ईश्वर कृपा के वर्णन गीत अथवा स्तुति गाया जाता है। ऐसे एक पवित्र वातावरण का सर्जन होता है। आरती के प्रकाश में ईश्वर का प्रत्येक अंग का दर्शन करके उनकी सुंदरता, पवित्रता का अहेसास होता है। अग्नि देव देवताओं का आह्वान करने वाले है, इसलिए आरती द्वारा सभी देवताओ का आह्वान करके उनका आशीर्वाद लेने की भावना है। ईश्वर कृपा के बदले हर्षोल्लास के साथ उनका गुणगान गाते उनके प्रत्ये कृतज्ञता व्यक्त करने की भावना है।
आरती में घी, तेल, कपूर, इत्यादि डालने से आसपास का वातावरण शुद्ध बनता है। वात,- पित्त, कफ जैसे रोगो का निवारण होता है। पवित्र सुवास फैलती है एवं शरीर के लिए हानिकारक जंतुओ का भी नाश होता है। कपूर अपना संपूर्ण अस्तित्व जलाकर औषधी जैसा काम करता है, तथा वातावरण शुद्ध करता है। वैसे ही मनुष्य को अगर खुद भी जलने की जरूरत पडे तो जलकर परोपकार करना चाहिए। ऐसे आरती का वैज्ञानिक ऐर मनोवैज्ञानिक दोनो तरह से महत्व है।

उपसंहार –

" सवाल जब श्रद्धा का हो तो कहाँ प्रमाणो की जरूरत होती है ? "
भगवद्गीता में कहाँ योगेश्वर के हस्ताक्षर होते है ? ''

© 2024 by Author

DIVYAYATAN -
A JOURNAL OF LAKULISH YOGA UNIVERSITY
Peer Reviewed Journal
E-ISSN: 3048-4928

"श्रद्धावान्लभते ज्ञानं तत्परः संयतेन्द्रियः "।[10] श्रद्धा का अर्थ होता है, समझकर विचार करके हृदयभाव पूर्वक अनुसरण करना , समझे बिना अनुसरण करना अंधश्रद्धा कहलाता है। हिन्दु धर्म की प्राचीन पद्धति वैज्ञानिक कारणो के अनुसार ही है। आने वाली पेढी के सही पद्धति के साथ साथ उसका यथार्थ महत्व भी समझाने का प्रयत्न करना चाहिए जिससे वे इन प्रथाओं से वंचित न रहे। प्राचीन हिन्दु धर्म के ग्रंथो में समस्त प्रथाएँ विधिपद्धति के साथ दी हुई है, एसका उचित अभ्यास हो, मात्र पूजा घर में ही नही पर जीवन्त जीवन में भी वेदो की पूजा हो, उसका श्रद्धापूर्वक अनुसरण हो तो ही वेदो की सही सार्थकता है।

सन्दर्भसूची

ॐ अग्निमिले पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्। होतारं रत्नधातमम्॥ प्रथमश्लोक, ऋग्वेदसंहिता , प्रथमसुक्त, प्रथममण्डल, (हिन्दी)

समुद्रवसने देवि पर्वतस्तन मंडले विष्णु पत्नि नमुस्तभ्यं पादस्पर्श क्षमस्व मे॥ ॐ त्र्यबकं यजामहे, सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।

उर्वारूकमिव बन्धनात्, मृत्योर्मोक्षीय मामृतात्॥ मन्त्र – 12, अनुवाक- 59 ऋग्वेद मंडल

यज्ञशिष्टाशिनः सन्तो मुच्यन्ते सर्वकिल्बिषैः भुंजते ते त्वद्य पापा ये पचन्त्यात्मकारणात्॥ श्रीमद्भगवतगीता, अनुवादक- ज्योतिर्विभुषण, विद्याभास्कर, महोपदेशक, श्री कृष्णमोहनजी, शर्मापंडीत, प्रकाशक- छगनलालगोपालजी वायडा, मुंबई -2

उपवास् उपवासम् To dweel in or inhabit. The state of being near Sanskritdictionary.com, word- Upavash, ref.no. 2.7..42

यन्मूले सर्वतिर्थानि यन्मध्ये सर्वदेवताः। यदग्रे सर्वदेवश्च तुलसी त्वं नमं मह्यं॥ https://meerasubbarao.wordpress.com tulasi-pooja- slokas

आगमार्थमतु देवानाम् गमनार्थमतु राक्षसम् कुर्वे घंटारवम् तत्र देवताहवानालक्षणम् Article – science of ' Rhythm divine ' that flows through temple bells Nagupurtoda.in

त्वं पुरा सागरोत्पन्नो विष्णुनाविधीताः करे। नीर्मितः सर्व दैवश्च पांचजन्य नमोस्ते॥ worshipping the lord bathing conch (shankpuja) in Rudrashtika, lord

न तत्र सूर्यो भाति न चन्द्रतारकं नेमो विद्युतो भान्ति कुतोयमग्निः। तमेव भान्तमनुभवति सर्वं तस्य भासा सर्वमिदं विभाति॥ पृ.क्रं. 34, श्लोक-5 द्वितीयोध्यायः, पंचमीवल्ली, (3) कठोपनिषद्

श्रद्धावांल्लभते ज्ञानं तत्परः सयतेन्द्रियः। ज्ञानं लब्धवा परां शान्तिमचिरेणाधिगच्छति॥ श्रीमद्भगवतगीता, अध्याय-4 श्लोक. 39

© 2024 by Author